इस ज्ञान मार्ग में वास्तव में बाप से प्रश्न पूछने का उठना ना चाहिये। बाप सब कुछ ही युक्ति से बताते रहते है। जिससे कि सब प्रश्न दूर हो जाते है। बच्चो में संशय बुधि तो भी ना सके। बाप के लिये निश्चय है कि बाप है। तो बाप स्वर्ग की स्थापना तो जरूर ही करते है ना। वोही बाप समझावेगे और क्या। बाप ही टीचर है तो पढ़ाई में लग जाना चाहिये ना। योग ही है मुख्य। योग से ही पाप कटते है। पढ़ाई से फिर दर्जा प्राप्त होता है ना। बच्चो को समझ जाना चाहिये कि कितना ही सहज है। बाप पढ़ाते है और स्वर्ग की स्थापना भी करते है। स्वर्ग का उदघाटन तो और कोई भी कर ना सके। जब भी कुछ बनाते है तो महूरत भी करते है। यह भी स्थापना तो होगई फिर है मेहनत करना और वर्सा पाना है। सो तो होना ही है ना। कोई भी बात पूछने की नही रहती है। बाप से तो जरूर ही वर्सा मिलना ही है। बाकी उंच पाने के लिये तो गुप्त ही मेहनत करनी है। सात दिन का कोर्स लेकर फिर कहां पर भी रहे। मिलट्री वालो के लिये तो बस एक अक्षर ही काफी है। गीता में है कि युध के मैदान में जो भी मेरेगे वो ही स्वर्ग में जावेगे। तो लड़ाई में भर्ती होते है फिर वोही संस्कार ले जाते है। तो जाकर लड़ाई में ही भर्ती होते है ना। वास्तव में तो यह है अहंकार की लड़ाई। तुम कोई जाकर इन मिलट्री वालो को भी समझाते हो (शिव बाबा को याद करके शरीर छोड़ेगे तो स्वर्ग में जा सकते हो। सदगति तो सब की ही होती है। भरत खण्ड ही बड़े ते बड़ा तीर्थ स्थान है। सब की ही सदगति होनी है। इसमें कोई भी प्रश्न उठना ना चाहिये। आगे ही विचार सागर मथन कर हल कर लेना चाहिये ना (शिव को तुम अगर पवित्र बना सकते हो तो थोड़ा बहुत खान पान की क्या बात है। परन्तु फिर भी दैवी गुण तो धारण करने ही है ना। हम देवता बनते है तो यह यह कैसे खावेगे। फिर आपे ही प्रबन्ध करते है) विलायत में जाने वालो को भी समझाया जाता है बाकी थोड़ा रोज़ के मुसाफिर है। सब आत्मायें ऊपर से आती है। फिर ऊपर में ही चली जावेगी। यह है पुरूषोतम संगम युग। इनका तो किसको भी पता नही है। तुम बच्चो के लिये ही गायन है अति इन्द्रिय सुख। यहां तो जिनको पैसे बहुत होते है वो ही बहुत खुशी में रहते है। पढ़ाई ही सोर्स आफ इनकम। इसमें ही बहुत बहुत इनकम है। बाप पढ़ाते है ना। पढ़ाने पर अटेंशन भी बहुत होना चाहिये। गरीबो को ही झट सेरेन्डर हो पड़ते है। धनवान नही हो सकते है। लड़ाई में भी तो [illegible] ही खर्चा होता है। यहां तो वो कोई भी बात नही है। गरीबो के पाई पैसे से ही कार्य हो जाता है। कोई कोई से भी पैसे लेकर क्या करेगे। काम में ही नही आवेगे। बाप तो व्यापारी भी है ना। तुम बच्चो का प्रभाव निकलेगा। फिर आपेही तुम को निमन्त्रण देते रहेगे। क्योंकि तुम ही ईश्वरी सेवा करती हो ना। यह है माया की पम्प। कोई तेज बुधि वाले तो झट में ही समझ जाते है। यह तो बिलकुल ही ठीक है। बाप को ही याद करने से पवित्र बन जावेगे। चक्र को याद करने से तो चक्रवर्ती राजा बन जावेगे ना। बाद में शाहुकारो को बाबा सेरेन्डर नही होने देगे ना। बाप तो है ही गरीब निवाज़। गायन भी है ना कि अबलायें अहिलयायें। साधुओं सन्यासीयों को तो गरीब नही कहेगे ना। बाप तो कहते भी है ना कि मैं तो कल्प कल्प ही आता हू। यह भी तो एक खेल है ना। इसको ही चाहे तो खेल कहे चाहे स्टोरी कहे। सुनाते है ना कि आगे आगे एक राजा था फलाणा था। तुम कहेगे कि पहले तो इन देवि देवताओ का राज्य ही था। फिर कैसे कैसे हुआ। जो जो पास्ट हो जावे उनका तो कब भी चिन्तन ना करना चाहिये। जो कुछ भी हुआ सो ड्रामा। ख्याल तो बिलकुल भी ना करना चाहिये। फिकर से फारिग। जरा सी भी तो फिकर की बात नही है। फिकरात तो होता ही है माया के राज्य में। सतयुग में तो फिकर से फारिग होते है। इस समय तो पढ़ाई का ही फिकर करना चाहिये क्योंकि पढ़ाई से ही उंच पद पाने होना। जो भी तुम्हारा है वर्सा वो ही लेते हो। यह भी तो तुम ही सिर्फ अभी जानते हो ना। सतयुग त्रेता तो कितने समय है यह तो और किसको भी पता नही है। वो तो गपोड़ा ही मारते रहते है ना। तुम बच्चो को नम्बरवार ही खुशी रहती है ना। यह भी समझाना चाहिये कि शिव बाबा ही पतितो को पावन बनाने वाला और मनुष्य सृष्टि का बीज चैतन नालेज फुल है। बाप ही बताते है कि हमारे में रचना के आद मध्य अन्त का नालेज है। अच्छा गुड नाईट